# घर में प्रकृति

डेविड, चित्र : युजीन, हिंदी : विदूषक

# घर में प्रकृति

डेविड, चित्र : युजीन, हिंदी : विदूषक

“उठो जेमी! देखो आज शनिवार का दिन है. आज हम पापा के साथ प्रकृति निरीक्षण पर जायेंगे.”

“मेगन, आज मेरा जाने का मन नहीं है. मैं बहुत थका हूँ. और वैसे भी बाहर बारिश हो रही है.”

“अरे नहीं,” मेगन ने कहा. “फिर हम क्या करेंगे?”

“इतने उदास होने की कोई बात नहीं है,” पापा ने कहा.

“हम घर पर ही प्रकृति निरीक्षण करेंगे.”

“वो कैसे?” जेमी ने पूछा.

“चलो, हम तुम्हारे पलंग की चादर और कम्बल से ही शुरू करते हैं. अच्छा बताओ, यह चीज़ें कहाँ से आती हैं?”

“दुकान से,” जेमी ने कहा.

“पर वे किस चीज़ की बनी हैं?” पिताजी ने पूछा.

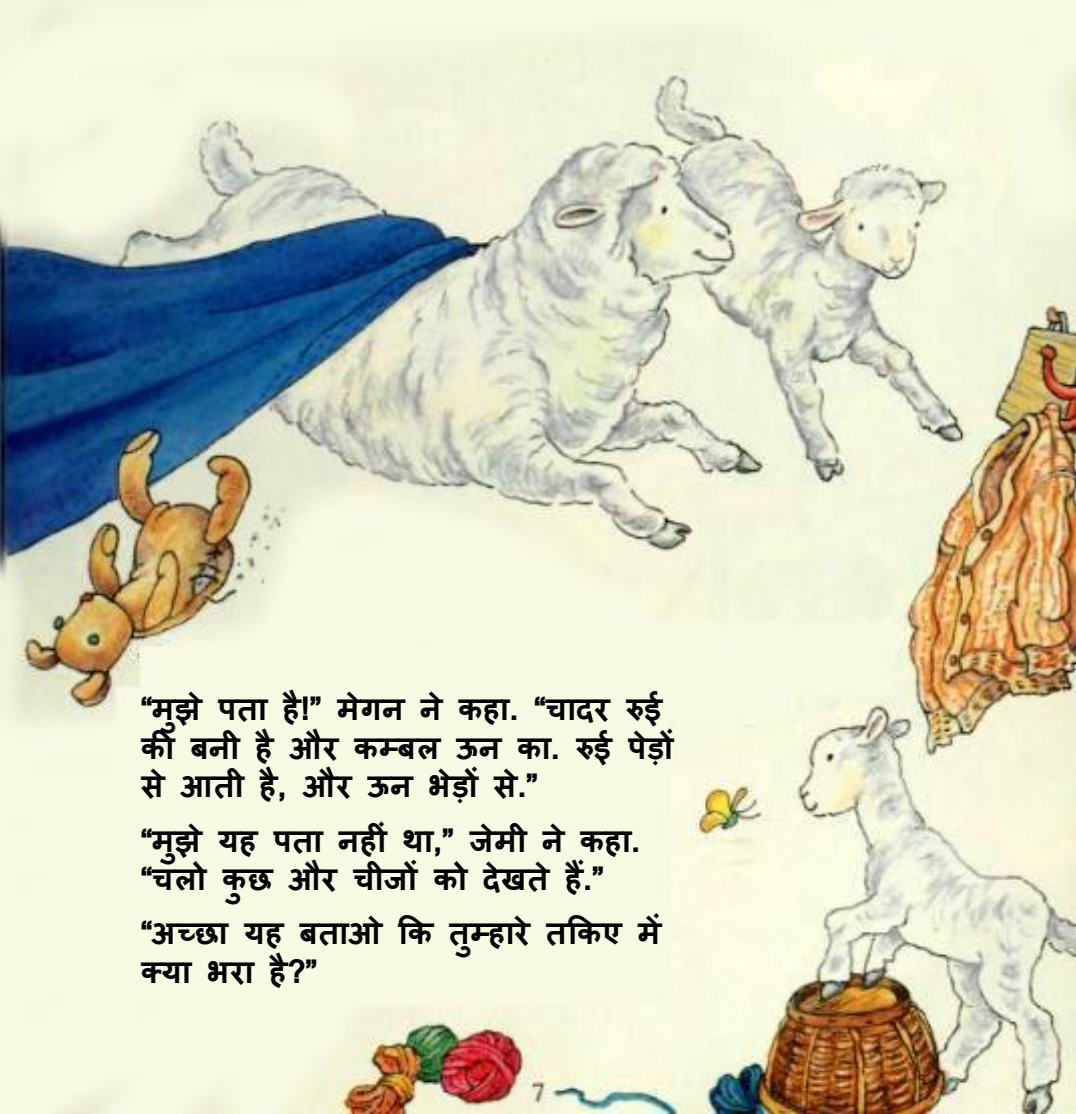

"मुझे पता है!" मेगन ने कहा. "चादर रुई की बनी है और कम्बल ऊन का. रुई पेड़ों से आती है, और ऊन भेड़ों से."

"मुझे यह पता नहीं था," जेमी ने कहा. "चलो कुछ और चीजों को देखते हैं."

"अच्छा यह बताओ कि तुम्हारे तकिए में क्या भरा है?"

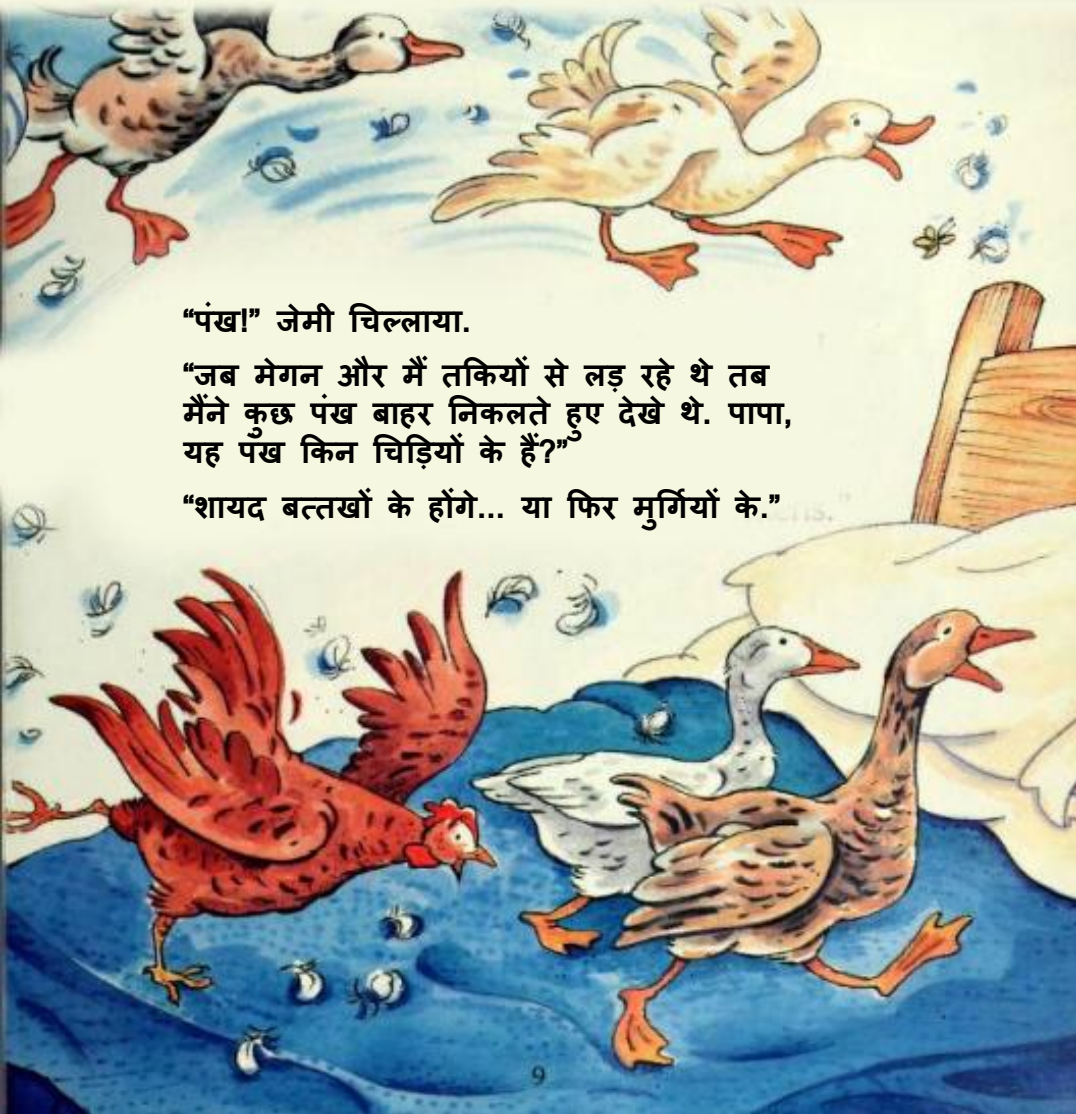

"पंख!" जेमी चिल्लाया.

"जब मेगन और मैं तकियों से लड़ रहे थे तब मैंने कुछ पंख बाहर निकलते हुए देखे थे. पापा, यह पंख किन चिड़ियों के हैं?"

"शायद बत्तखों के होंगे... या फिर मुर्गियों के."

“जो अंडे हम खाते हैं वो मुर्गियों से आते हैं,” मेगन ने कहा, “और दूध और पनीर भी गायों से आता है. हमारा पूरा फ्रिज तो भोजन देने वाले जानवरों से भरा है!”

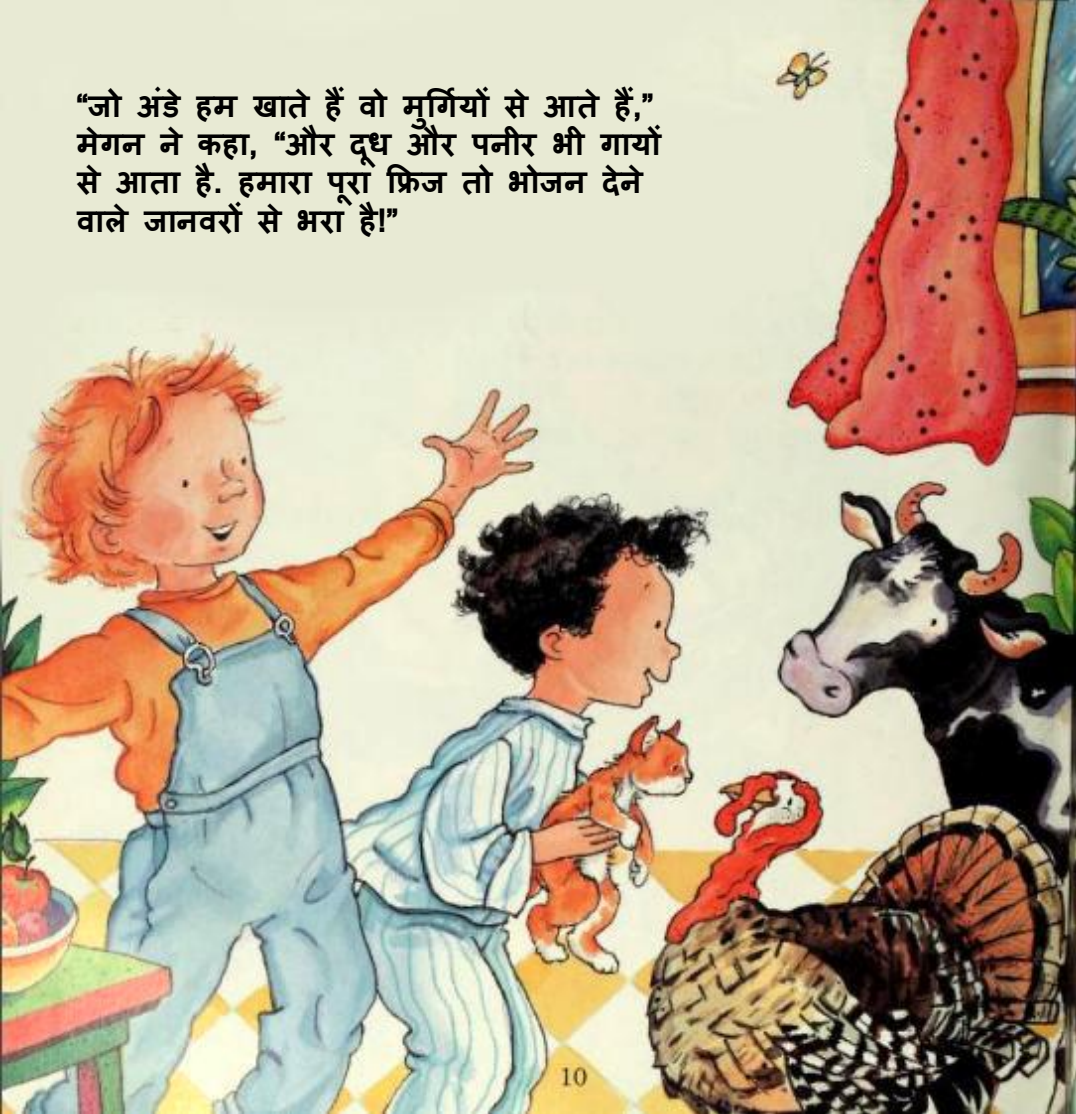

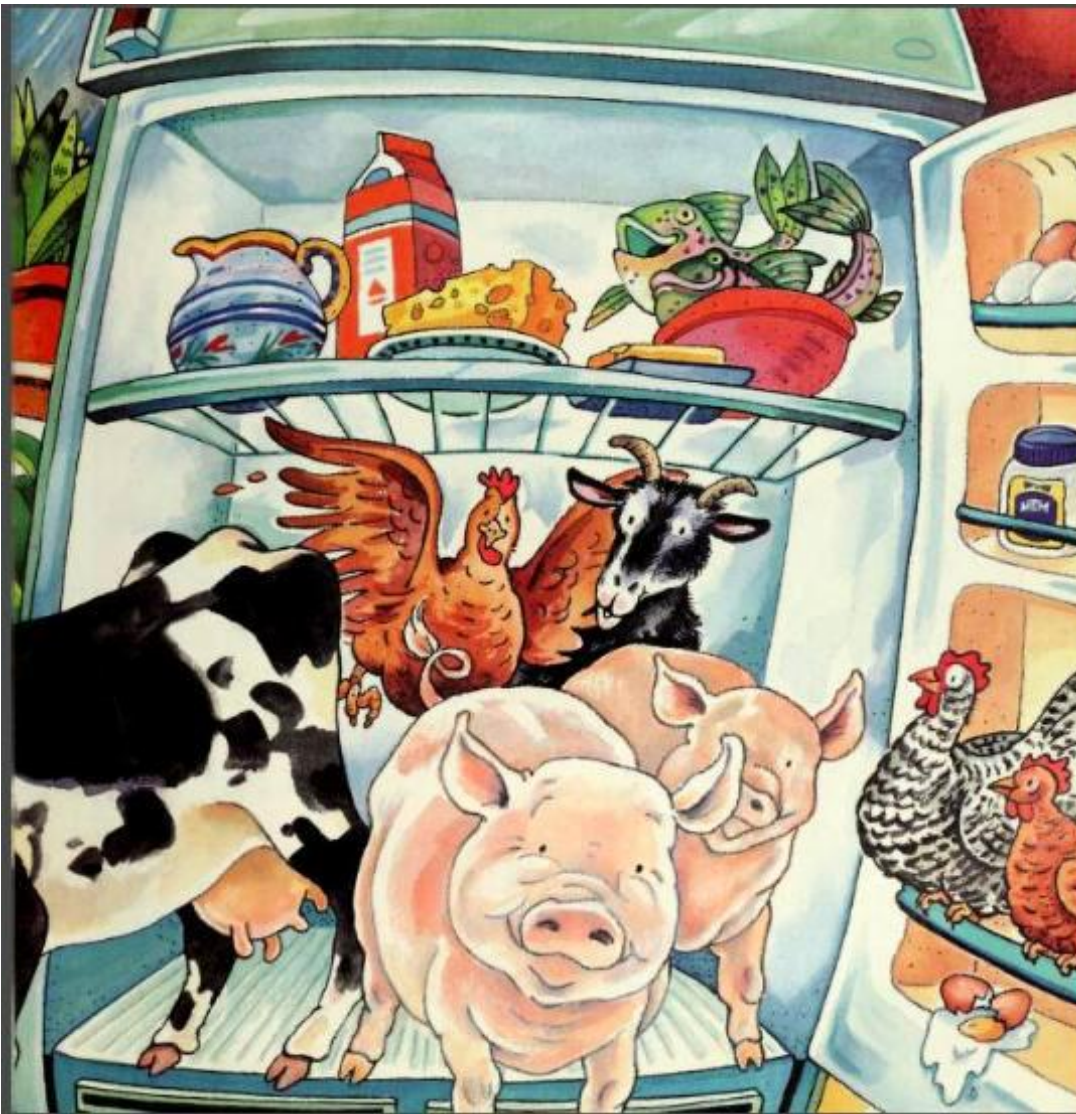

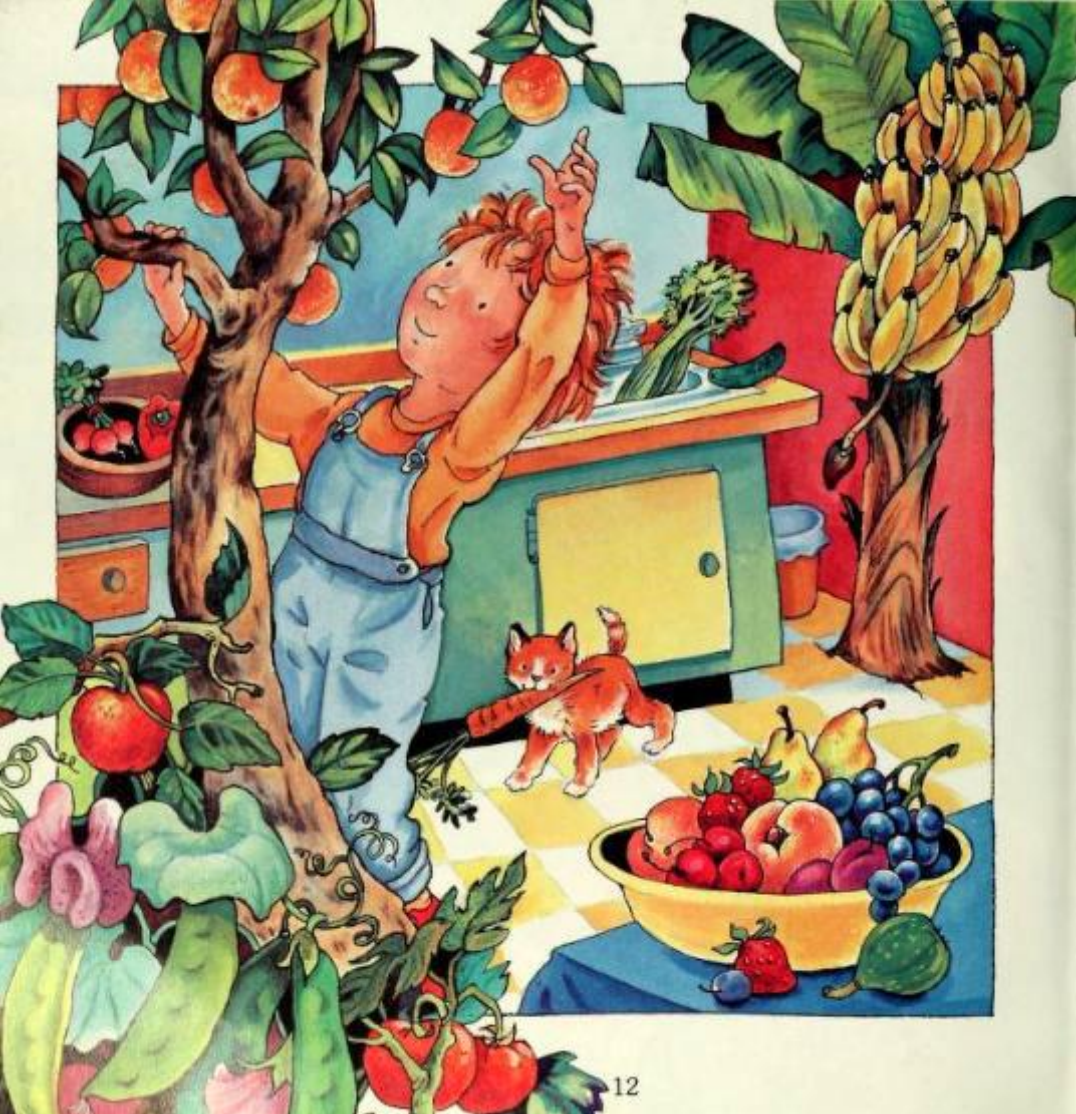

“गाजर और मटर पौधों से ही आती हैं,” मेगन ने कहा. “संतरे और नाशपातियां भी पेड़ों से आती हैं.”

“क्या पेड़ों और जानवरों से हमें पूरा भोजन मिल जाता है?” जेमी ने पूछा.

“जो कुछ भी हमें अपने शरीर को तंदरुस्त रखने के लिए चाहिए वे सभी चीज़ें हमें प्रकृति से मिलती हैं,” पापा ने कहा.

“देखो, हमारे घर में एक पूरा जंगल है. क्या तुम उसे ढूँढ सकते हो?”

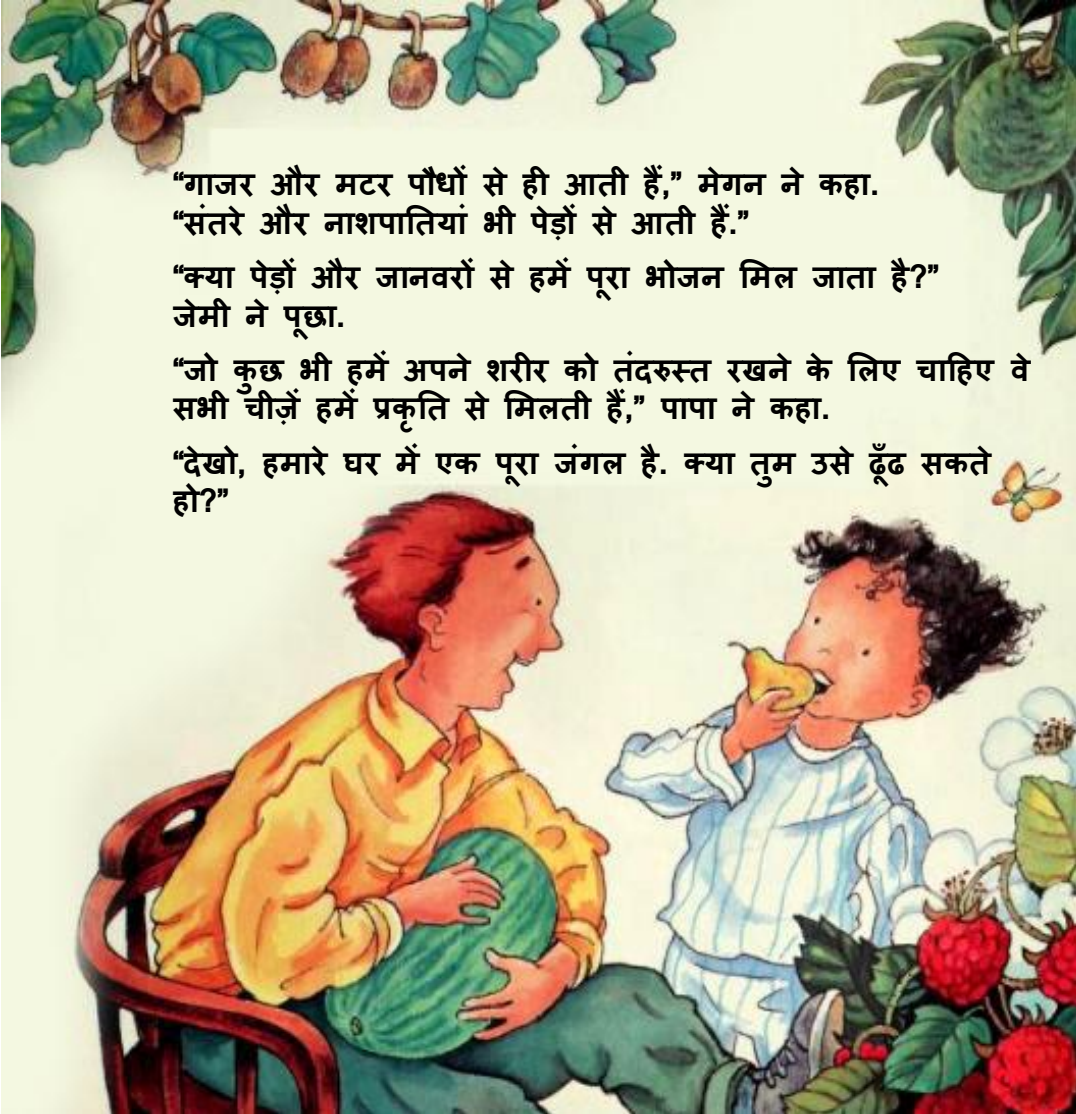

“मुझे पता है, मुझे पता है!” जेमी चिल्लाया.

“देखो यह फर्श और कुर्सियां लकड़ी की बनी हैं.”

“तुम्हारी अल्मारी चीड़ की लकड़ी की बनी है. और डाइनिंग टेबल बाँझ (ओक) की लकड़ी की बनी है.”

“बाँझ के पेड़ पर जो बीज लगते हैं उन्हें गिलहरियाँ खाती हैं,” जेमी ने कहा. “हो सकता है टेबल बनने से पहले उस बाँझ के पेड़ पर गिलहरियाँ दौड़ रही हों.”

“यह बिलकुल संभव है,” पापा ने कहा,
“शायद तब उस पेड़ पर चिड़िए और कीड़े भी हों.”

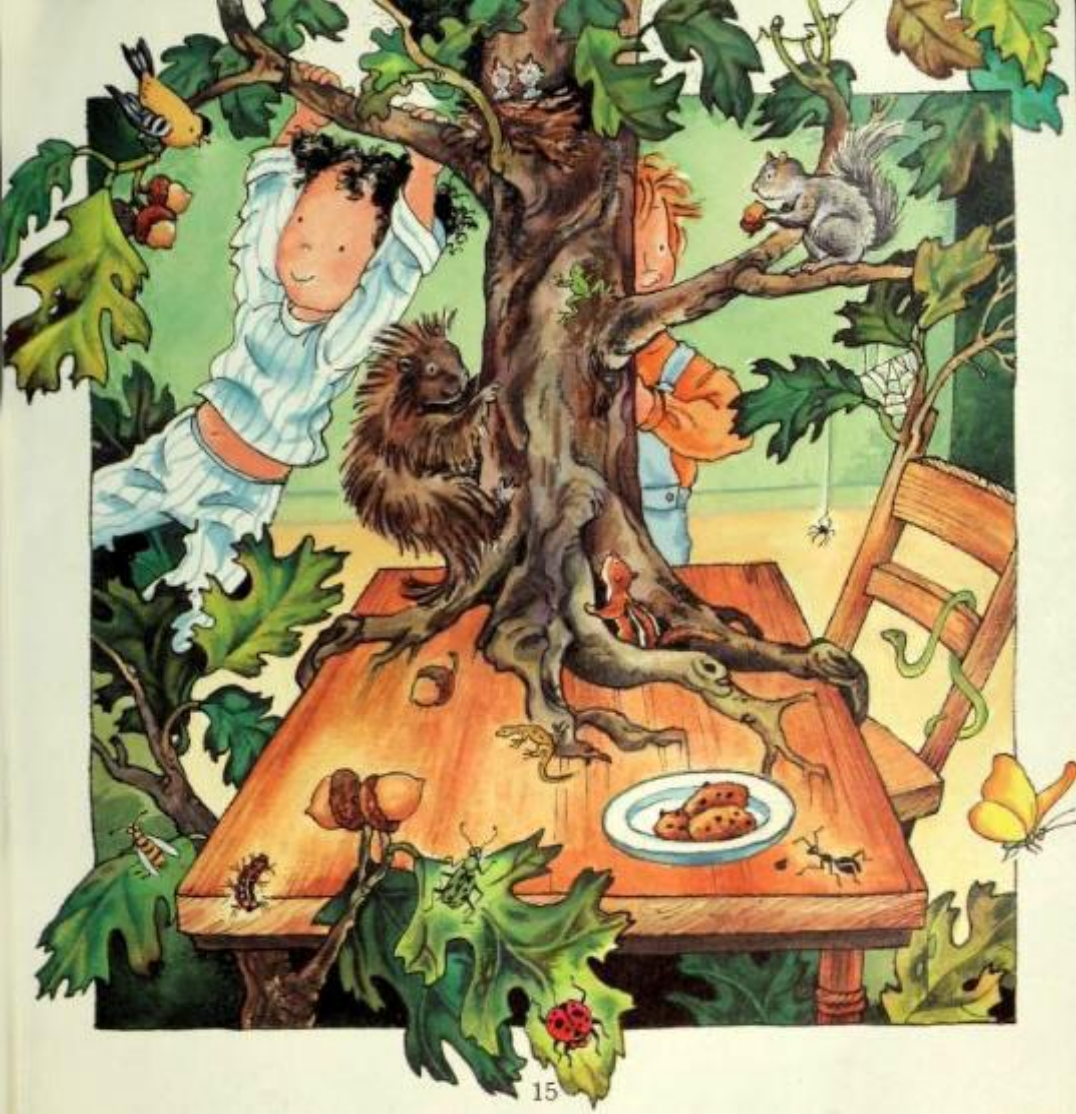

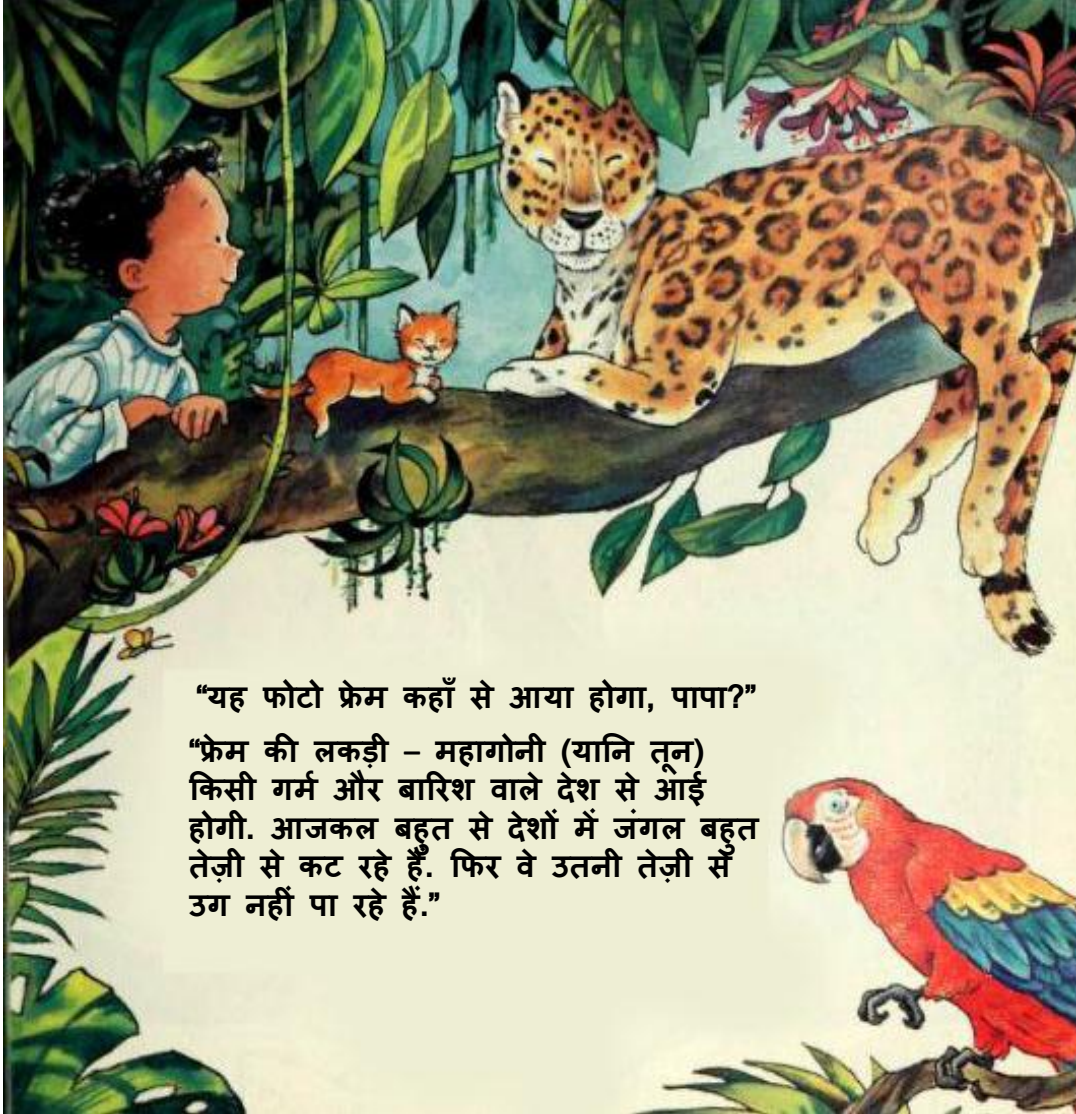

“यह फोटो फ्रेम कहाँ से आया होगा, पापा?”

“फ्रेम की लकड़ी – महागोनी (यानि तून) किसी गर्म और बारिश वाले देश से आई होगी. आजकल बहुत से देशों में जंगल बहुत तेज़ी से कट रहे हैं. फिर वे उतनी तेज़ी से उग नहीं पा रहे हैं.”

“क्या कागज़ भी लकड़ी से ही बनता है?” जेमी ने पूछा.

“हाँ, कागज़ बनाने के लिए बहुत लकड़ी लगती है. ज़रा कल्पना करो हमारे अखबारों, किताबों और पत्रिकाओं में कितने पेड़ छिपे पड़े हैं. यानि, हमारे इस कमरे में भी, एक छोटा सा जंगल है.”

“क्या हम उस लकड़ी को दुबारा उपयोग यानि रीसाईकिल कर सकते है, पापा? तब शायद हम पेड़ों का बार-बार उपयोग कर पाएं.”

“हाँ ज़रूर. पर उसके लिए हमें लकड़ी को धीमी गति से ही उपयोग करना होगा. तब हम पेड़ों के लकड़ी से हमेशा कुछ-न-कुछ बना पाएंगे.”

“घर के अन्दर की नेचर-वाक में हम और कहाँ-कहाँ जा सकते हैं, पापा?”

“क्या तुम चीन जाना चाहोगे?”

“चीन?” मेगन चिल्लाई.

“पर वो तो हमारे देश से बहुत दूर है.”

“नहीं, वो हमारे पास में ही है. ज़रा अपनी माँ के कुर्ते को देखो. वो चीन की रेशम से बना है. वैसे तो इल्लियाँ (कैटरपिलर) रेशम बनाती हैं. वो उन्हें कोयों में बुनती हैं.”

“अच्छा, इस स्पंज को किसने बनाया होगा? जेमी ने पूछा.

“क्या किसी ने इसे बनाया है या यह भी प्राकृतिक है?”

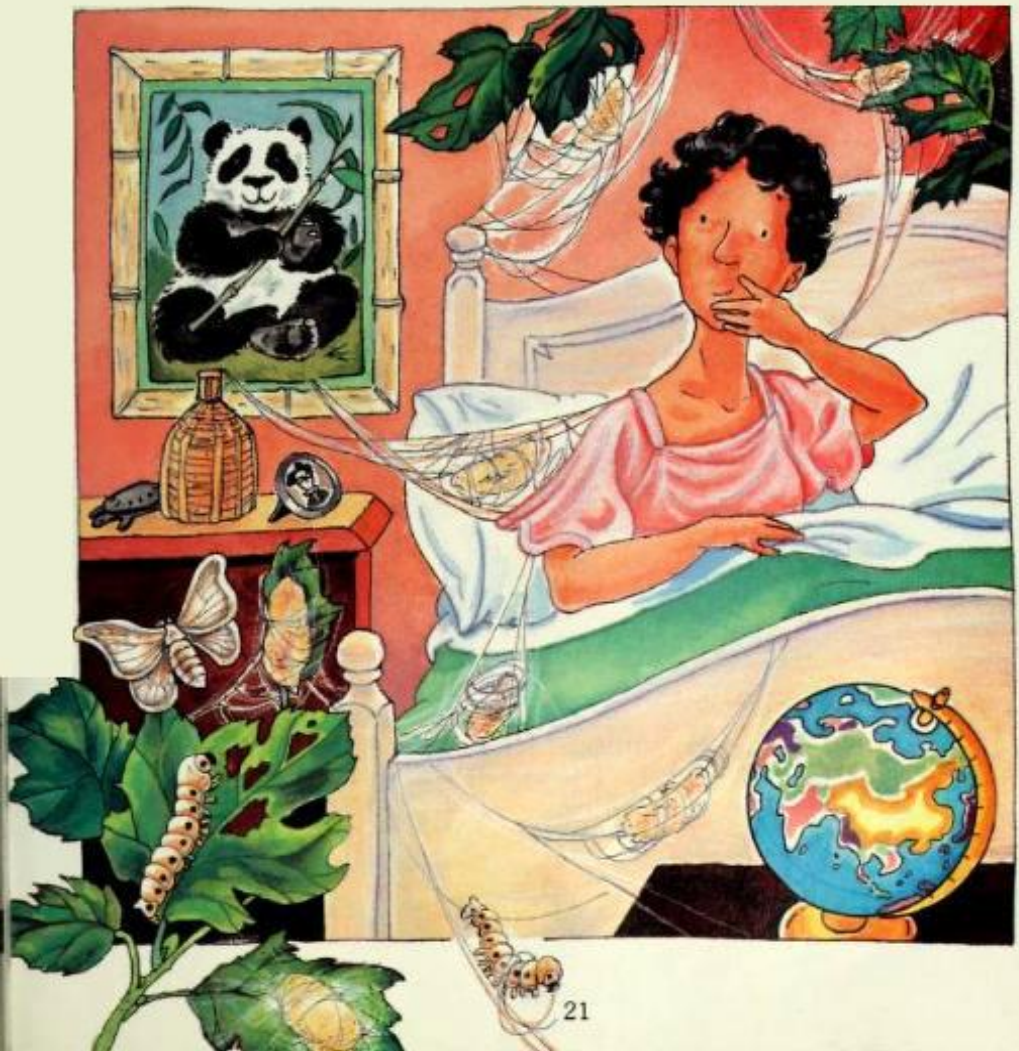

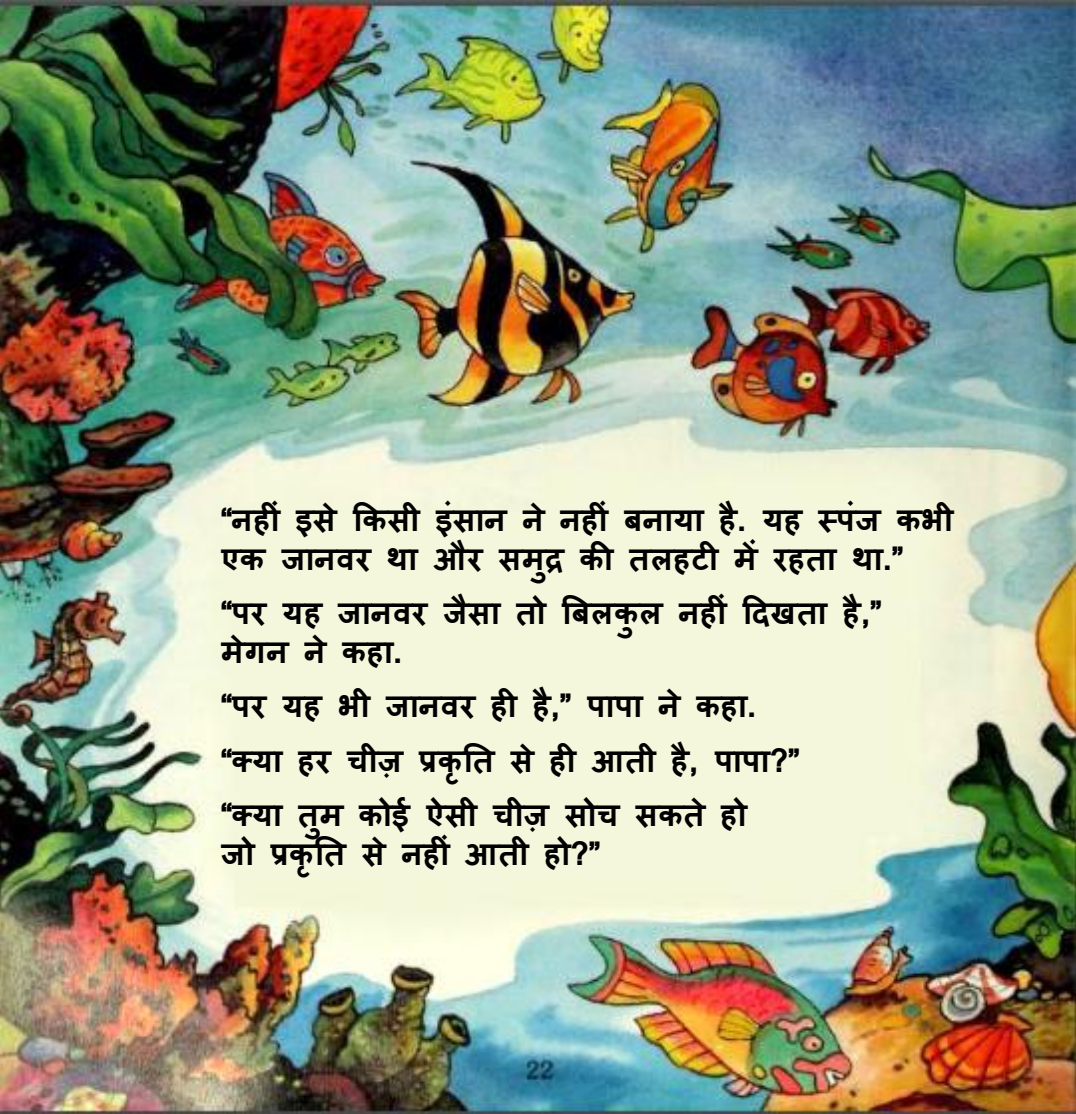

"नहीं इसे किसी इंसान ने नहीं बनाया है. यह स्पंज कभी एक जानवर था और समुद्र की तलहटी में रहता था."

"पर यह जानवर जैसा तो बिलकुल नहीं दिखता है," मेगन ने कहा.

"पर यह भी जानवर ही है," पापा ने कहा.

"क्या हर चीज़ प्रकृति से ही आती है, पापा?"

"क्या तुम कोई ऐसी चीज़ सोच सकते हो जो प्रकृति से नहीं आती हो?"

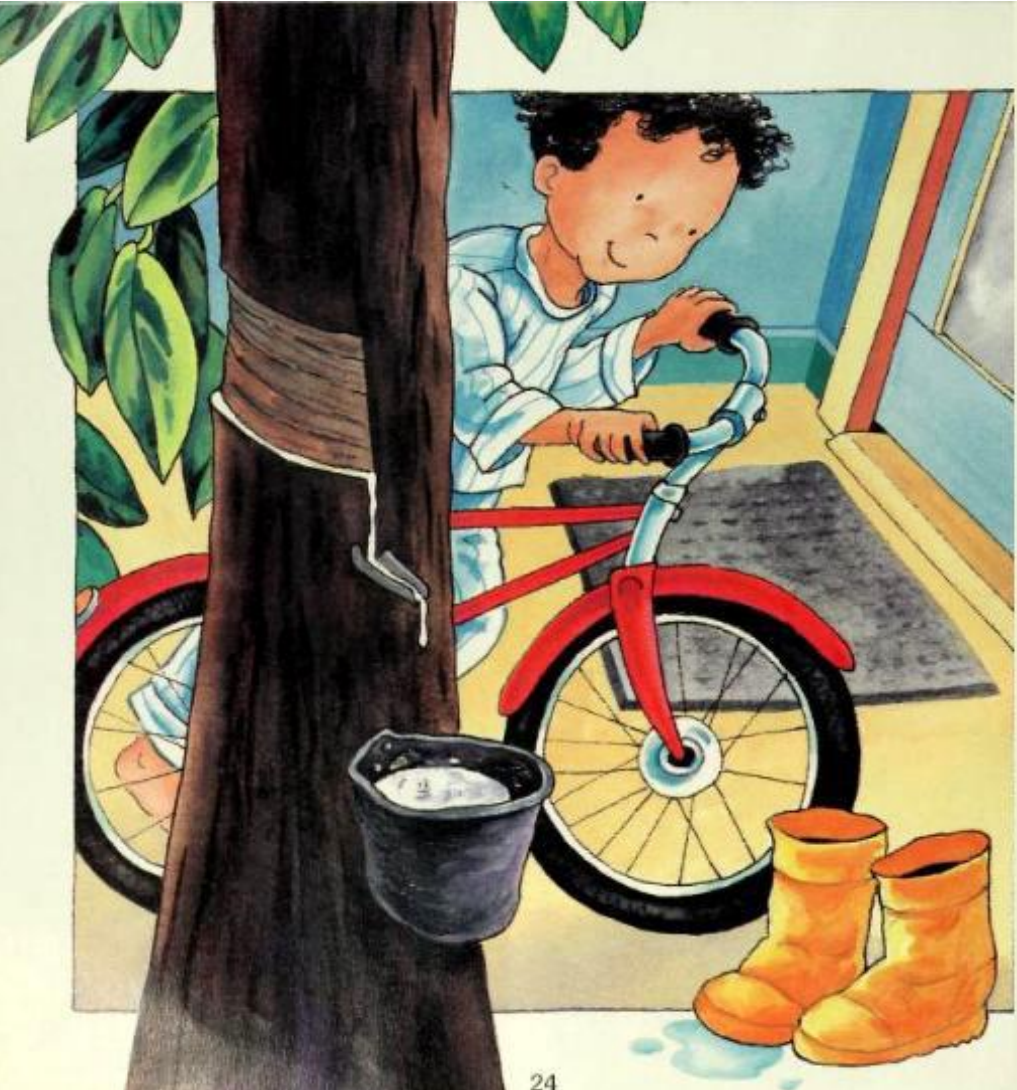

फिर जेमी कुछ मुस्कुराया. “मेरी साइकिल का टायर! वो तो निश्चित फैक्ट्री में बना है.”

“नहीं बेटा. टायर रबर से बनते हैं.
और रबर एक पेड़ से आती है.”

“रबर का पेड़!” मेगन ने कहा.

“अच्छा तो फिर क्या प्लास्टिक भी किसी पेड़ से ही आती होगी?”

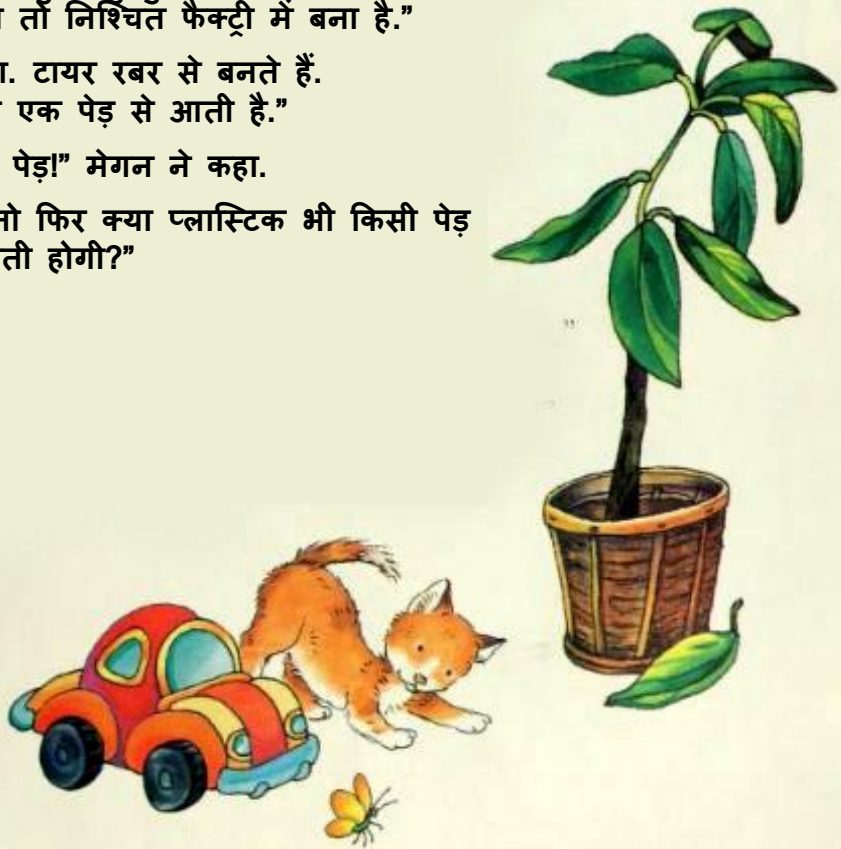

पापा हँसे.

“प्लास्टिक, तेल से बनती है. तेल, गैस और कोयला उन पेड़ों से बने हैं जो आज से लाखों-करोड़ों साल पहले पृथ्वी पर मौजूद थे. यह पेड़ एक लम्बे अर्से तक ज़मीन में दबे रहे और उसके बाद धीरे-धीरे करके वे तेल, गैस और कोयले में बदल गए.”

“हो सकता है जिस प्लास्टिक से मेरा पेन बना है, वो प्लास्टिक भी उस पेड़ से आई हो जिसे किसी डायनासोर ने खाया हो,” जेमी ने कहा.

“यह बिल्कुल संभव है,” पिताजी ने सहमति जताई.

“पापा, तो फिर क्या प्रकृति हर चीज़ में मौजूद है?” जेमी ने पूछा.

“हाँ, हर चीज़ में.

हमारी खिड़कियों में लगा कांच रेत से बना है.

चाय पीने के कप-प्याले, सब चीनी-मिट्टी से बनते हैं.

सभी धातुएं पत्थरों से बनती हैं.

मैं तुम्हारी बात से पूरी तरह सहमत हूँ,

प्रकृति हमारे चारों ओर है.”

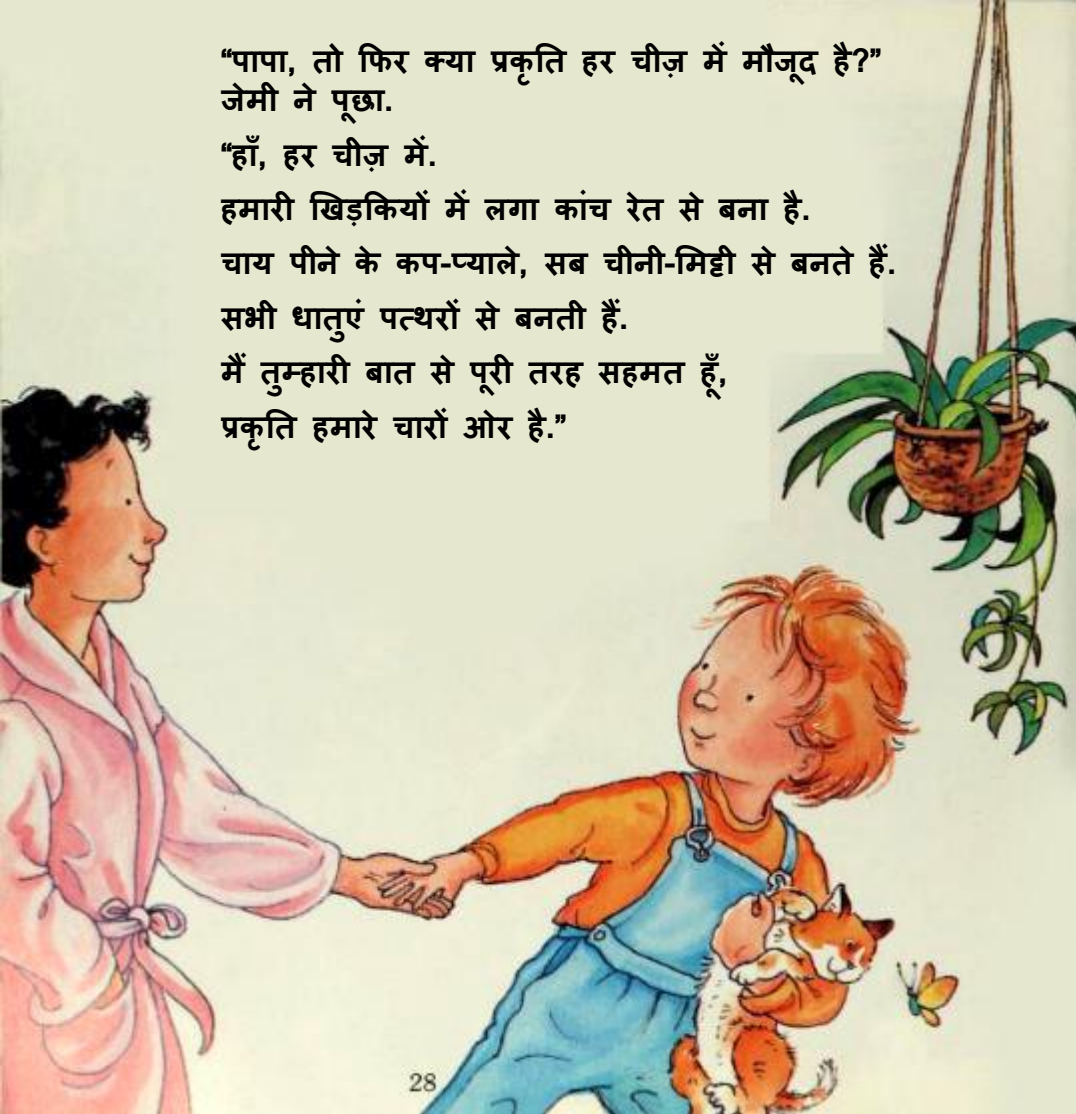

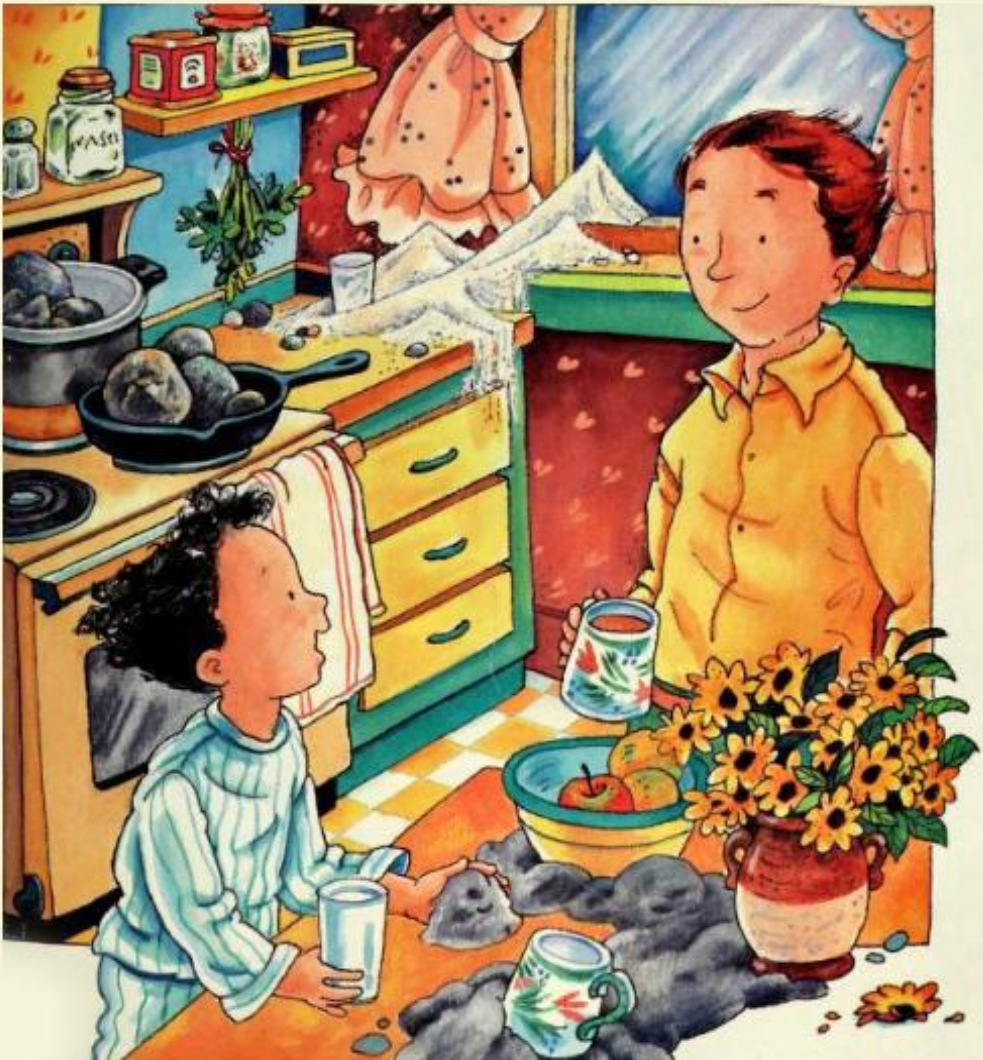

GRAINS

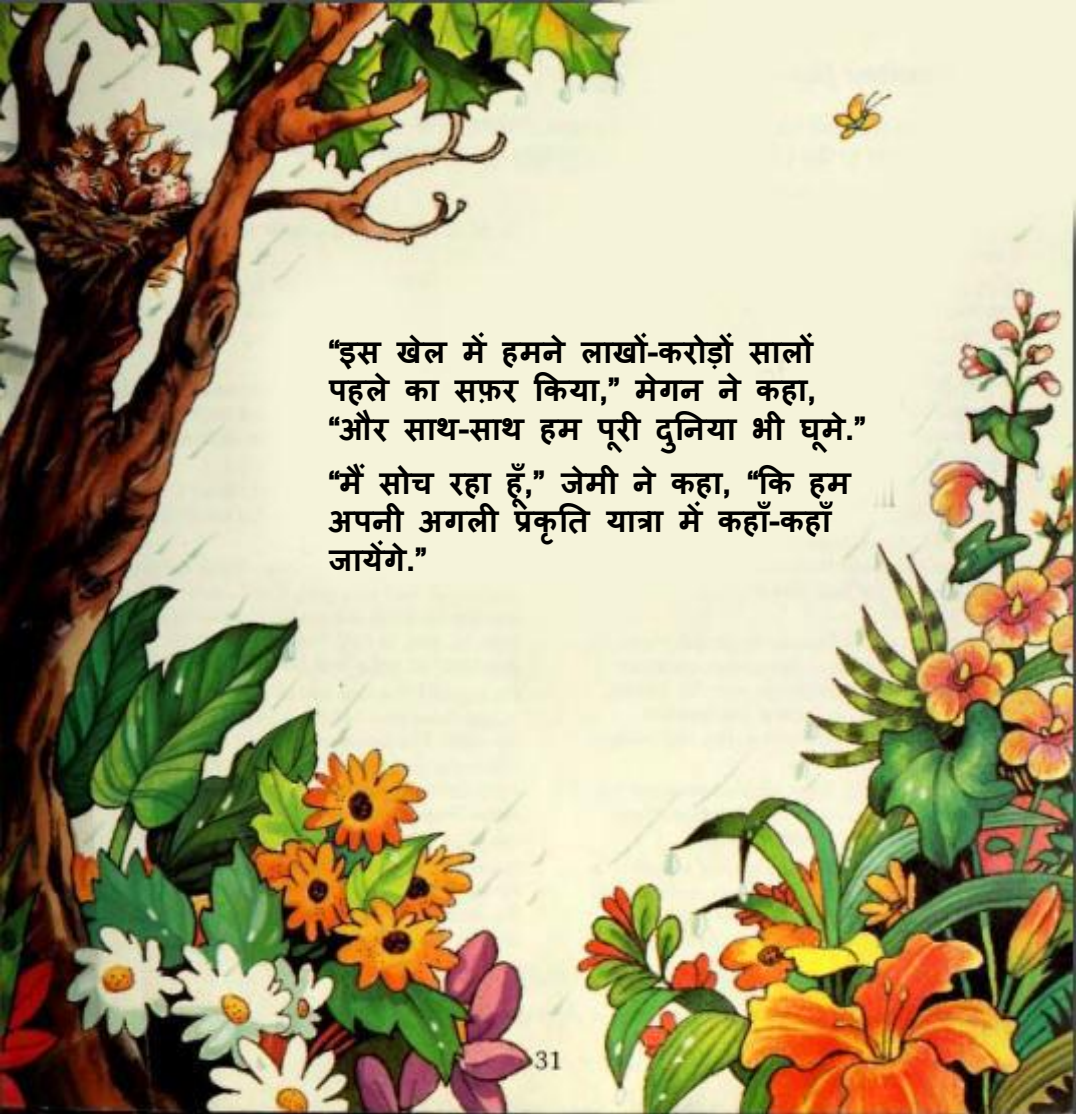

“इस खेल में हमने लाखों-करोड़ों सालों पहले का सफ़र किया,” मेगन ने कहा, “और साथ-साथ हम पूरी दुनिया भी घूमे.”

“मैं सोच रहा हूँ,” जेमी ने कहा, “कि हम अपनी अगली प्रकृति यात्रा में कहाँ-कहाँ जायेंगे.”

जेमी और मेगन को डर है कि वो बाहर बारिश होने के कारण आज प्रकृति निरीक्षण के लिए अपने पापा के साथ बाहर नहीं जा पाएंगे. इस मज़ेदार कहानी से हमें पता चलता है कि प्रकृति सिर्फ बाहर ही नहीं है पर वो हमारे चारों ओर भी है – वो हमारे घर के अन्दर भी मौजूद है. पलंग की चादरें, तकिये, किताबें और पेन, फल और फर्नीचर – यह सभी प्रकृति की देन हैं. मेगन और जेमी के लिए यह चीज़ें जादुई तरीके से पैदा होती हैं. इसका पूरा श्रेय डेविड सुजुकी की कहानी और यूजीन फ़र्नानडिस के लाजवाब चित्रों को है.

बहुत कम लोग ही अपने घरों में समुद्र या जंगल खोज पाते होंगे. पर हमें पता हो या नहीं, प्रकृति हम सभी के घरों में भरपूर मात्र में मौजूद है.

डेविड सुजुकी को अपनी बेटियों - सेवर्न, सारिका और पत्नी तारा के साथ समुद्र तट पर और जंगलों में घूमने में बहुत मज़ा आता है. वहां उन्हें तमाम तरह की मछलियाँ, मेंढक और कीड़े मिलते हैं. जब वे घर में होते हैं तब वे यह खेल खेलते हैं - कि घर में मौजूद सारी चीज़ें आखिर कहाँ से आईं.

यूजीन फ़र्नानडिस को बचपन से ही छोटी-छोटी चीज़ें इकट्ठी करने का शौक है.